सास ने किया बहू के फैसले का सम्मान क्योंकि सास भी तो एक महिला ही है।

जिला टीकमगढ़ के जुडावन ग्राम पंचायत की नव विवाहिता द्वारा की गई शौचालय की माँग और खुले में शौच ना जाने के अडिग फैसले से प्रेरित होकर सास ने घर में बनवाया शौचालय । स्वच्छता क्रांति की अग्रणी जिला बैतूल के चिचोली गाँव की अनिता नर्रे, जिसने अपने ससुराल वालों से शौचालय निर्माण की माँग रखी उसका प्रभाव मध्यप्रदेष की अनेकों युवतियों पर दिखाई देता है।

यह कहानी है रचना कि जो कि भोपाल मध्यप्रदेष की रहने वाली है। रचना का विवाह बिराजपुरा गाँव, जुडावन ग्राम पंचायत, जिला टीकमगढ़ के युवक राघवेन्द्र के साथ हुआ और जब उसने शौच क्रिया के लिए घर में कोई व्यवस्था नहीं पाई तो रचना ने अनिता नर्रे के पदचिन्हों पर चलते हुये अपने पति पर घर में शौचालय निर्माण करवाने के लिए दबाव बनाया। उसने खुले में शौच जाने के लिए दृढ़ता के साथ मना किया और वो अपने मायके यह कह कर लौट आई कि जब तक घर में शौचालय नहीं होगा मैं वापस नहीं आऊँगी। रचना की सास ने रचना की माँग को माना और घर में स्वच्छ शौचालय बनवाया चूकिं रचना की सास गांव में स्थानीय संस्था के द्वारा एमपीवॉष के सहयोग से गावं को खुले में षौच मुक्त करने के अभियान से जुड चुकी थी। इस तरह रचना अपने ससुराल में वापस लौट आई और खुषहाल जिन्दगी जी रही है।

बिराजपुरा गाँव जिसमें परहित संस्था द्वारा समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता (CLTS) विधि से ग्रामीण समुदाय को स्वच्छता के मुद्दे पर जागरूक और संवेदनषील करने ट्रिगरिंग किया गया। जिसका अनुकूल प्रभाव रहा और समुदाय स्वच्छता के प्रति सजग हुआ एवम् सर्वप्रथम समुदाय ने निर्णय लिया कि वे अपने घरों में शौचालय निर्माण करवाएंगे। इससे पहले ग्रामीणों के बीच मिथ्या बनी थी कि घर में शौचालय रखने से अकाल और विपत्तियों का सामना करना पड़ता है। परन्तु संस्था के सदस्यों ने निरन्तर लोगों से स्वच्छता पर संवाद बनाए रखा और समाज में फैली इसी मिथ्या को तोड़ पाने में सफल रहे।

इसी प्रक्रिया में गांव का एक परिवार जिसमें षौचालय नही था वह रचना का घर था रचना जिसका कि मई 2014 में गांव के राघवेन्द्र के साथ विवाह हुआ था। नव दाम्पत्य जीवन में प्रवेष करते ही रचना को धक्का लगा कि उसके ससुराल में शौचालय जैसी नितान्त आवष्यक सुविधा भी नहीं है और उसे शौच के लिए खुले में जाना होगा। मायके से शौचालय का उपयोग करती आ रही रचना ने खुले में शौच जाने की गन्दी कुप्रथा का विरोध किया। खुले में शौच ना जाना पड़े इस डर से रचना ने भोजन करना छोड़ दिया। 4 दिनों तक रचना ने कोई भी ठोस आहार नहीं लिया केवल वो तरल पदार्थ ही लेती रही। उसके बाद रचना अपने मायके आई और निष्चय किया कि जब तक उसके ससुराल में शौचालय नहीं बन जाएगा वो तब तक

वहाँ वापस नहीं जाएगी।

रचना का यह फैसला उसकी सास राजकुमारी को झकझोर गया और फिर राजकुमारी ने किसी सरकारी अनुदान या मदद के इंतजार में समय ना गवाते हुए अपने घर में शौचालय बनवाया।

राजकुमारी जिसके घर में दो कुँवारी बेटियाँ थी उसे अपनी बहु के इस फैसले से शौचालय की आवष्यकता का आभास हुआ। जबकि पहले राजकुमारी की सोच में शौचालय प्राथमिकता में नहीं आता था और वो किसी बाहरी संस्थाओं की प्रतीक्षा में भी थी, जो आकर उसके घर में भी शौचालय का निर्माण करवा दे।

समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता विधि से जब परहित संस्था के सदस्यों ने समुदाय को स्वच्छता के प्रति जागरूक करने का कार्य किया था तब राजकुमारी ने भी समझा था कि कैसे खुले में शौच जाने की कुप्रथा आत्म–सम्मान और प्रतिष्ठा को तार–तार करती है साथ ही स्वास्थ्य और समृद्धि को प्रभावित करती है। ट्रिगरिंग के दौरान स्पष्ट विष्लेषण से लोगों को एहसास हुआ था कि कैसे मक्खियाँ खुले में शौच से गंदगी को खाने और अन्य वस्तुओं पर पहुँचाती हैं। समुदाय को एहसास कराया गया था कि इस कुप्रथा से महिलाएँ सुरक्षित नहीं हैं और उनके सम्मान और रक्षा के लिए यह कुप्रथा खत्म होनी चाहिए।

घर की बहु की दृढ़ माँग ने राजकुमारी को प्रेरित किया और अन्ततः घर के बाहर शौचालय निर्माण हुआ। जहाँ अधिकांष गाँव वालों ने टेंक वाला शौचालय बनवाया राजुकमारी ने दो गड्ढे वाला लीच पिट शौचालय का निर्माण करवाया क्योंकि इस शौचालय से ना तो बदबू आती है और दूसरी तरफ लागत भी कम आती है। उसने ग्राम पंचायत के सरपंच के शौचालय से सबक लिया जो कि टैंक वाला था परन्तु उससे बदबू आती थी।

उत्साही राजकुमारी अब एक और शौचालय निर्माण का मन बना चुकी है जो घर के अन्दर ही बनवाएगी और जिसके साथ स्नानघर भी होगा। उसकी समझ बन गई है कि घर के अन्दर बना शौचालय अधिक सुविधा पूर्ण होता है, खासकर रात्रि के समय में।

घर में अपना निजी शौचालय का सुख लेती राजकुमारी ने अब निर्णय लिया है कि वो अपनी दोनो बेटियों का विवाह ऐसे ही परिवारों में करेगी जिसके घरों में स्वयम् का शौचालय हो। राजकुमारी ने स्वीकार किया की निजी शौचालय की कमी से उसने जो तकलीफ भोगी है वो उसकी बेटियाँ नहीं भोगेंगी।

****

स्त्रोत : एम पी वॉश, वाटर एड